विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-८८

नित नवल
प्रभास कुमार चौधरी

पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक
साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

यथार्थवाद | स्त्री-अस्मिता | सामाजिक न्याय
उपन्यास | कथा | आख्यान-शिल्प

LXXXVIII

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · साहित्यिक आलोचना-शृंखला

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८८ · **LXXXVIII**

नित नवल प्रभास कुमार चौधरी

सात अध्ययनक सम्पादकीय समीक्षा

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८८ · LXXXVIII

नित नवल

प्रभास कुमार चौधरी

पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक

साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

उपन्यास · कथा · आख्यान-शिल्प · सामाजिक न्याय

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८८ · LXXXVIII

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल प्रभास कुमार चौधरी

उपशीर्षक : पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक सात अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

समीक्षाक आधार आ सीमा

ई सम्पादकीय समीक्षा गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल प्रभास कुमार चौधरी’मे उपलब्ध पाँच उपन्यास-समीक्षा आ दू कथासंग्रह-समीक्षाक पुनर्पाठ अछि। मूल कृतिक कथात्मक संसार, ठाकुरक विश्लेषण आ एतयक सम्पादकीय निर्णय अलग प्रमाण-स्तर पर राखल गेल अछि। मूल ग्रन्थसभक स्वतंत्र पूर्ण प्रतिक अभावमे विशेष उद्धरण, संस्करण वा प्रकाशन-विवरणक स्वतन्त्र सत्यापनक दावा नहि कएल गेल अछि।

सम्पादकीय विवेचनक लक्ष्य लेखकक प्रतिष्ठाक पुनरुक्ति नहि, कथ्य, कथन-शिल्प, स्त्री-पात्रक अधिकार, सामाजिक सत्ता आ आलोचनाक प्रमाण-सीमाक सन्तुलित परीक्षण अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : सात आलोचनात्मक अध्ययनक पाठ-क्षेत्र आ समीक्षा-पद्धति

द्वितीय विभाग : 'अभिशप्त' आ 'युगपुरुष'क पुनर्पाठ

तृतीय विभाग : 'हमरा लग रहब?' आ 'नवारम्भ'क सत्ता-रचना

चतुर्थ विभाग : 'राजा पोखरिमे कतेक मछ्री?'क लोककथा आ प्रतिरोध

पंचम विभाग : 'दिदवल'क बीस कथाक सामाजिक आ आख्यानिक परिप्रेक्ष्य

षष्ठ विभाग : 'कथा-प्रभास'क तीन दशक आ कथन-शिल्प

सप्तम विभाग : उपन्यास आ कथाक साझा आलोचनात्मक प्रश्न

अष्टम विभाग : समेकित सम्पादकीय निर्णय

सन्दर्भ-विवरण

सात अध्ययन : अभिशप्त · युगपुरुष · हमरा लग रहब? · नवारम्भ · राजा पोखरिमे कतेक मछ्री? · दिदवल · कथा-प्रभास

प्रथम विभाग : सात आलोचनात्मक अध्ययनक पाठ-क्षेत्र आ समीक्षा-पद्धति

१. पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रह : आलोचनाक सम्मिलित धरातल

'नित नवल प्रभास कुमार चौधरी'मे गजेन्द्र ठाकुर पाँच उपन्यास—'अभिशप्त', 'युगपुरुष', 'हमरा लग रहब?', 'नवारम्भ' आ 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'—संग दू कथासंग्रह 'दिदवल' आ 'कथा-प्रभास'क विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत छथि। सातो आलेखक अपन विषय, पाठ-विन्यास आ सन्दर्भ-सूची अछि। एहि कारण एकर सम्पादकीय पुनर्पाठमे पहिल आवश्यकता ई अछि जे प्रत्येक अध्ययनक विशिष्ट तर्क सुरक्षित रहय; बादमे ओकर भीतर उभरैत साझा कथात्मक आ सामाजिक समस्याक तुलना सम्भव बनय। पाँच उपन्यासक पात्र आ संघर्षकेँ दू कथासंग्रहक लघु आख्यानसँ यन्त्रवत् एक करब मैथिली गद्यक विविधताकेँ ओझराएत।

एहि संग्रहक व्यापक प्रश्न व्यक्ति आ समाजक नैतिक दावाक बीच दूरी अछि। शिक्षित पुरुष स्वयंकेँ आधुनिक मानैत अछि, मुदा दाम्पत्यक समानता स्वीकार नहि करैत; समाज महानताक उपाधि दैत अछि, मुदा शोषण रोकैत नहि; सामन्ती व्यवस्था पतनशील अछि, मुदा ओकर अधिकारबोध नव व्यवहारमे फेर जन्म लैत अछि। कथा-संग्रहसभमे एही संकट अधिक छोट घटना, संवाद, स्मृति, गामक गप, कार्यालयक अनुशासन आ पारिवारिक निर्णयक रूपमे अबैत अछि। तें समग्र विवेचनक सूत्र समानता खोजब मात्र नहि, समान सामाजिक चिन्ता अलग-अलग साहित्यिक विधामे कोना रूपान्तरित होइत अछि से देखब थिक।

२. मूल कृति, समीक्षात्मक स्थापना आ सम्पादकीय निर्णय

आलोचनाक तीन स्तर फराक राखब एहि खण्डक मूल पद्धति अछि। पहिल स्तर प्रभास कुमार चौधरीक मूल कथा वा उपन्यास; दोसर स्तर ओहि रचनासभ पर गजेन्द्र ठाकुरक उपलब्ध अध्ययन; तेसर स्तर एहि अध्ययनक तर्क, प्रमाण-विवेक आ रूपगत मूल्यांकनक सम्पादकीय पुनर्पाठ। मूल रचनाक प्रत्यक्ष

भाषिक प्रमाण उपलब्ध नहि रहल स्थलपर ठाकुरक वर्णनकेँ मूल रचनाक शब्दशः उद्धरण मानि नहि लेबाक चाही। आलोचक जखन पात्रक आचरणसँ सामाजिक निष्कर्ष निकालैत छथि तखन प्रश्न उठैत अछि—कथानकक घटनासँ निष्कर्ष कतेक निकलैत अछि आ समीक्षकक वैचारिक दृष्टि ओकरा कतेक दिशा दैत अछि?

एहि भेदक कारण आलोचना कमजोर नहि, अधिक उत्तरदायी बनैत अछि। उपलब्ध सात अध्ययनमे नाम, घटना, प्रसंग, विधागत संकेत आ पूर्ववर्ती आलोचकक मतक चर्चा भेटैत अछि। एहन उल्लेख पर आधारित तुलनात्मक विचार सम्भव अछि; मुदा प्रकाशन-इतिहास, विशेष संस्करणक पाठभेद वा कोनो मंचन-परम्पराक स्वतन्त्र पुष्टि एतय दावा नहि कएल गेल अछि। तें कृतिक कलात्मक उपलब्धि तथा अध्ययनक प्रमाण-सीमा पर अलग-अलग निर्णय देब आवश्यक अछि। सम्पादकीय प्रश्नक केन्द्र प्रशंसाक मात्रा नहि, तर्कक विश्वसनीयता अछि।

३. सामाजिक यथार्थवाद : विषयक व्यापकता आ शिल्पक अनुशासन

उपलब्ध अध्ययनसभमे 'सामाजिक यथार्थवाद' एक आवर्ती आलोचनात्मक पद अछि। मुदा ई पद केवल गाम, परिवार, वर्ग वा कार्यालयक उपस्थिति जनाबयवला नाम नहि। कथा जखन एक पात्रक निर्णयकेँ दोसराक जीवन, धनक वितरण, संस्थागत संरक्षण आ परम्पराक दबावसँ जोड़ैत अछि, तखन सामाजिक सम्बन्ध कथानकक कारण बनैत अछि। ठाकुर अनेक स्थलपर ई कारण-सम्बन्ध चिन्हैत छथि—'अभिशप्त'क दाम्पत्य, 'हमरा लग रहब?'क सामन्ती नियन्त्रण, 'नवारम्भ'क शक्ति-अन्तरण आ 'दिदवल'क संस्थागत विडम्बना एकर उदाहरण अछि।

तथापि सामाजिक विषयक गम्भीरता कलात्मक सफलताक स्वतः प्रमाण नहि। पात्रक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन, संवादक स्वाभाविकता, कथनकर्ताक दूरी, समयक वितरण आ अन्तक विश्वसनीयता साहित्यिक मूल्यांकनक स्वतंत्र कसौटी छथि। जँ पात्र केवळ सामाजिक दोषक प्रतिनिधि बनि रहि जाए, तँ उपन्यासक जीवन-अनिश्चितता घटि सकैत अछि। उलट, कथा जँ समस्याक

निराकरण नहि दैत, मुदा ओकर जटिल कारणक अनुभव गाढ़ बनबैत अछि, तँ साहित्यिक उपलब्धि महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि। एहि विवेकक आधारपर सातो अध्ययन पढ़ल जाएत।

द्वितीय विभाग : 'अभिशप्त' आ 'युगपुरुष'क पुनर्पाठ

४. 'अभिशप्त' : आत्मनिर्मित संकट आ सार्वजनिक नैतिकताक फाँक

'अभिशप्त'क अध्ययन शीर्षकक अलौकिक अर्थकेँ अस्वीकारि मनुष्य द्वारा निर्मित सम्बन्धगत संकटपर बल दैत अछि। प्रकाश आ मीराक दाम्पत्यकेँ केन्द्रमे रखैत ठाकुर शिक्षित मध्यवर्गक एक निर्णायक असंगति पकड़ैत छथि : शिक्षा वा सार्वजनिक प्रतिष्ठा पारिवारिक लोकतन्त्रक आश्वासन नहि। प्रकाश अपन पत्नीकेँ लघु करबाक माध्यमेँ अपन श्रेष्ठता सुरक्षित करय चाहैत अछि; ओहि व्यवहारमे ओकर असुरक्षा उद्घाटित होइत अछि। मीरा मात्र पुरुषक पतनक पृष्ठभूमि नहि, शिक्षा आ आत्मसम्मानक अपन अधिकार रखनिहार व्यक्ति छथि। एहि दूनूक बीच संवाद आ नियन्त्रणक संघर्ष उपन्यासक नैतिक केन्द्र बनैत अछि।

ठाकुरक अध्ययन दाम्पत्यक बाहर मित्रताक कृत्रिमता, कार्यालयी अनुशासनहीनता आ साहित्यिक आडम्बरक प्रसंगकेँ जोड़ैत अछि। ई विस्तार उपयोगी अछि, कारण निजी आ सार्वजनिक नैतिकता भिन्न-भिन्न द्वीप नहि। मुदा एतय प्रश्नो उठैत अछि—कथाक विविध प्रसंग वाकई एकहि कारण-शृंखला बनबैत अछि कि आलोचक हुनका एक सामाजिक निष्कर्षक भीतर समेटैत छथि? प्रमाणक स्तरपर घटना आ टिप्पणीक क्रम अधिक सूक्ष्म रूपमे मिलाएल जाए तऽ अध्ययनक एकसूत्रता मजबूत होएत। विशेषतः प्रकाशक दोषक विवेचन करैत समय ओकर सामाजिक संस्कार आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व दुनूकेँ स्थान देब उचित अछि।

५. मीराक दृष्टि आ उपन्यासक स्त्री-स्वायत्तताक प्रश्न

'अभिशप्त'मे मीराक शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक बनैत अछि। पत्नी पढ़ल-लिखल छथि; मुदा ओहि कारणेँ परस्पर सम्मान सुनिश्चित नहि। आलोचना

एहि अन्तरकेँ स्पष्ट करैत अछि आ पुरुष-अहंक आलोचनाकेँ केवल असभ्य व्यवहारक निन्दा भरि नहि रहय दैत। स्त्रीक व्यक्तित्व प्रति असमान दृष्टि स्वयं शिक्षित समाजक संरचनागत समस्या बनि उठैत अछि। एतय स्त्रीवादी पुनर्पाठक उचित दिशा ई अछि जे मीराक शब्द, असहमति, निर्णयक अवसर आ कथनकर्ताक दृष्टि पर स्वतंत्र ध्यान देल जाए।

मुदा अध्ययनक सामाजिक निष्कर्षकेँ सर्वोपरि मानि पात्रक आन्तरिक जीवनक विविधता विस्मृत करब उचित नहि। मीरा पाठमे कतेक बेर स्वयं बाजैत छथि, कतए कथावाचक हुनकर अनुभवक व्याख्या करैत अछि, आ कतेक स्थलपर प्रकाशक संकट कथात्मक दृष्टिक केन्द्र बनैत अछि—ई प्रश्न रचनाक लैङ्गिक सन्तुलन जाँचबाक कसौटी अछि। केवल 'स्त्री अस्मिता'क नाम लेनाइ पर्याप्त नहि; स्त्री-पात्रक वास्तविक कथनाधिकार देखबाक चाही। ठाकुरक समीक्षामे एहि दिशाक महत्त्वपूर्ण आधार भेटैत अछि, मुदा अधिक पाठ-सापेक्ष उदाहरण अध्ययनकेँ आरो सघन बना सकैत अछि।

६. 'युगपुरुष' : सार्वजनिक महिमामण्डनक उलटबाँसी

'युगपुरुष' शीर्षक पाठकमे महान व्यक्ति सम्बन्धी अपेक्षा जगबैत अछि; गजेन्द्र ठाकुरक विवेचन एहि अपेक्षाक विडम्बना खोलैत अछि। उपन्यासक आरम्भमे बनारसक रहस्यपूर्ण वातावरण आ शंकरक जिज्ञासु बाल्य-अनुभव अछि, मुदा कथा आगाँ बढ़ैत रत्नाक शोषण आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक प्रश्न दिश सरकैत अछि। करुणेश, रोजी, रमन, आनन्द, चम्पा आ शोभा सन पात्रक उपस्थिति व्यापक सामाजिक जाल रचैत अछि। एतय 'महान' कहल जाएब आ नैतिक रूपेँ महान होयब एक बात नहि; समाज ककरा उपाधि दैत अछि, ई स्वयं राजनीतिक प्रक्रिया बनि जाइत अछि।

एहि अध्ययनक वास्तविक शक्ति शीर्षकक व्यंग्यात्मक सम्भावना आ शोषित व्यक्तिक सार्वजनिक उपयोगक अन्तर चिन्हबामे अछि। तथापि शंकरसँ रत्ना दिस कथाकेँ सरकब केवळ रचनात्मक विकिरण कहि देलापर ओकर सम्भावित बहुकेन्द्रीयता अनदेखी होएत। दोसर दिस, प्रत्येक अप्रत्याशित मोड़केँ सामाजिक जटिलता कहि बचाएबो उचित नहि। पात्रक परिवर्तनक कारण, दृष्टिबिन्दुक निरन्तरता आ घटनाक आवश्यक सम्बन्ध जाँचबाक चाही। समीक्षक जखन महानताक राजनीतिक निर्माण पर बल दैत छथि, तखन ओकर

सामाजिक कारणक संग कथात्मक शिल्पक भीतरी गति बराबर महत्त्वपूर्ण अछि।

७. शंकर, रत्ना आ प्रतिरोधक अनिश्चित अधिकार

शंकरक प्रश्नाकुल शैशव आ बादक अधिकार-बोधक शिथिलता उपन्यासमे विवेकक सहज प्रगतिक मिथक तोड़ैत अछि। प्रश्न करनिहार बच्चा अनिवार्य रूपेँ प्रतिरोधी वयस्क बनत—एहन निश्चित नियम नहि। किन्तु साहित्यक उत्तरदायित्व ई अछि जे परिवर्तनक मनोवैज्ञानिक आधार पाठकक अनुभवमे पर्याप्त स्थापित हो। गजेन्द्र ठाकुर पूर्ववर्ती आलोचनाक सङ्ग संवाद करैत एहि संशयकेँ स्वीकार करैत छथि। एहि ठाम आलोचना चरित्रक अप्रत्याशितता आ कथाशिल्पक असंगतिक बीच उपयोगी भेद बनबैत अछि।

रत्नाक प्रसंग सामाजिक शोषण आ प्रतिरोधक कठिन सम्बन्ध देखबैत अछि। पीड़ित व्यक्ति प्रत्यक्ष विद्रोह नहि कयलक तँ ओकरा दोषी मानब अनुचित; विरोध लेल साधन, सुरक्षा, विश्वास आ सहायक सम्बन्ध चाही। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एहि संरचनागत विवशताक महत्त्व चिन्हैत अछि। मुदा रत्नाक अनुभवकेँ जनसमाजक एकमात्र प्रतीक बना देबासँ ओकर विशिष्टता घटि सकैत अछि। अध्ययनक आगाँक प्रश्न ई अछि जे उपन्यासमे स्वयं रत्नाक आवाज कतेक अछि, आ ओकर सामाजिक अर्थ दोसर पात्र अथवा कथनकर्ता द्वारा कतेक निर्धारित होइत अछि।

तृतीय विभाग : 'हमरा लग रहब?' आ 'नवारम्भ'क सत्ता-रचना

८. 'हमरा लग रहब?' : आश्रयक प्रस्ताव आ नियन्त्रणक राजनीति

'हमरा लग रहब?'क शीर्षक अन्तरङ्ग निकटताक आमन्त्रण जकाँ प्रतीत होइत अछि। मुदा ठाकुरक व्याख्यामे ई आश्रय सामाजिक सत्ता, सुरक्षा, आकर्षण आ अधीनताक असमान सम्बन्धसँ भरल अछि। प्रणव कथाक प्रमुख पात्र होइतहुँ अनिवार्य नायक नहि; अन्याय देखितो निर्णायक प्रतिरोध करबाक ओकर सीमित तत्परता समीक्षा लेल कठिन प्रश्न बनैत अछि। कल्लू चौधरीक सामन्ती प्रभाव, मुनेसरक पराधीनता, राजनीतिक संरक्षणमे मधुक संकट आ

मामा-मामीक सम्बन्धक शक्ति-पक्ष मिलि सामाजिक नियन्त्रणक विस्तृत दृश्य बनबैत अछि।

द्विखण्डीय कथा-विन्यास आ बहुपात्रीय संरचना समीक्षा द्वारा रेखांकित अछि। एहि रूपक मूल्यांकनमे प्रश्न ई अछि जे कथाक दू भाग घटना-संचय मात्र छथि कि अनुभवक अलग कालगत अर्थ तैयार करैत छथि। प्रणवक निष्क्रियता 'कमजोर नायक'क स्थिर नैतिक उपाधि नहि, पाठककेँ दर्शक होयब आ सहभागी होयबक बीचक अंतर बुझबाक अवसर देब चाही। कथामे अनेक लोक अन्यायक साक्षी भऽ सकैत छथि; साहित्यिक निर्णायकता तखन अबैत अछि जखन ई साक्षीपन पात्रक अपन निर्णयकेँ कठोर परीक्षा मेँ राखैत अछि।

९. शीला, मधु आ स्त्रीक स्वतन्त्र नैतिकता

शीला आ मधुक चित्रण पर ठाकुरक समीक्षा स्त्री-पात्रकेँ एकरूप पीड़िता मानि नहि चलबाक आग्रह करैत अछि। शीला प्रेम, आकर्षण, स्वाभिमान, घृणा आ निर्णयक असहज परतसँ बनल व्यक्तित्व छथि; मधुक सामाजिक स्थितिमे संरक्षणक दावा आ शोषणक व्यवहार एक-दोसरामे गुँथल अछि। सामन्ती नियन्त्रण केवल भूमिस्वामित्वक प्रश्न नहि; स्त्रीक शरीर, आवागमन आ सार्वजनिक प्रतिष्ठा पर निर्णय लेबाक अधिकारो एकर हिस्सा अछि। एहि कारण स्त्री-पात्रक सम्बन्धकेँ पुरुष-नायकक आत्मविकासक उपकथा बनाय देब कृतिक महत्त्व घटाओत।

आलोचनात्मक सावधानी ई अछि जे पात्रक दुखक कारण बतबैत समय ओकर सामाजिक विकल्प आ मौनक परिस्थिति सेहो जाँचल जाए। जे पात्र पर अन्यायक दबाव अछि, ओकर विरोधक आकार कोन सीमा धरि सम्भव छल, आ कथाक अन्त ओकरा कोन नैतिक स्थान दैत अछि—ई प्रश्न बिना प्रत्यक्ष पाठक प्रमाण पूर्ण रूपेँ निर्णीत नहि कएल जा सकैत अछि। ठाकुरक मनोवैज्ञानिक आ समाजशास्त्रीय दृष्टिक संयुक्त उपयोग एतय फलदायी अछि, मुदा ओहि संयुक्ततताकेँ पाठ-घटना आ पात्रक भाषिक अधिकारक सटीक परीक्षण चाही।

१०. 'नवारम्भ' : तीन खण्डमे बदलैत सत्ता, स्थिर रहैत संस्कार

'नवारम्भ'क उपलब्ध समीक्षामे 'हवेली मोहनपुर', 'लंका मोहनपुर' आ 'नवारम्भ' तीन कथात्मक खण्डक चर्चा अछि। पहिल खण्ड पुरान सामन्ती प्रतिष्ठाक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि; दोसर खण्ड विघटित सत्ता-सम्बन्धक भीतर नव अवसरवादक संकेत दैत अछि; तेसर खण्ड नवचेतनाक सम्भावनाक प्रश्न उठबैत अछि। श्रीकान्त चौधरी पुरान मर्यादाक रक्षक छथि, जखनकि एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र आ महेश मास्टर बदलैत प्रभुत्वक विभिन्न माध्यम बनैत छथि। एहि त्रिखण्डीयता कँ सरल 'पतनक बाद उत्थान' कहि देब उपन्यासक अन्तर्विरोध हल्का करब होएत।

ठाकुरक समीक्षामे सत्ता-संरचनाक परिवर्तन एकटा उपयोगी सूत्र अछि। इतिहासमे सामन्ती गृहस्थीक वैभव घटि सकैत अछि, मुदा हिंसा, निर्भरता, साम्पत्तिक दावा आ जातिगत दूरीक संस्कार नई भूमिकामे बचल रहैत अछि। कथा जँ एहने निरन्तरता देखबैत अछि तँ नाममात्रक राजकीय परिवर्तन सामाजिक न्यायक पर्याप्त शर्त नहि। तथापि 'नव आरम्भ'क व्याख्या करतें कथाक प्रत्येक पात्रकँ निश्चित ऐतिहासिक वर्गक पर्याय बनाय देब जोखिमपूर्ण अछि। साहित्यिक जीवनक अस्पष्टता आ वर्गगत विश्लेषणक स्पष्टता बीच समुचित सन्तुलन चाही।

११. रवि आ कविता : पश्चात्ताप न्याय नहि बनि जाइत

रविक भूमिकाक परीक्षण एहि समीक्षाक सर्वाधिक आवश्यक नैतिक बिन्दु अछि। समीक्षा-पाठक अनुसार रवि परिवर्तनक सम्भावनाक वाहक जकाँ प्रवेश करैत अछि, मुदा कविताक प्रति यौन-हिंसा, पलायन आ सम्पत्तिक विवादसँ ओकर नायकत्व कठोर रूपँ प्रश्नांकित होइत अछि। सामाजिक सुधारक घोषणा करनिहार पात्र यदि अपने कृत्यमे स्त्रीक गरिमाक उल्लङ्घन करैत अछि, तँ ओकर विचारधारात्मक वाणीकँ स्वतः नैतिक प्रमाण मानल नहि जा सकैत। कविताक अनुभव पुरुषक पश्चात्तापक पाठ मात्र नहि; ओ अपन हिंस्र अनुभवक भीतर स्वतंत्र न्याय-अधिकार रखनिहार व्यक्ति छथि।

एतय आलोचनाक कठोर कसौटी ई अछि जे अन्तिम मेल-मिलाप, अपराध-बोध अथवा प्रेमक भाषासँ हिंसाक सामाजिक तथ्य मेटि नहि जाए। गजेन्द्र

ठाकुरक अध्ययन रविक मनोवैज्ञानिक औचित्य, पछतावा आ दलित चेतनाक दावाक बीच अन्तर चिन्हैत अछि। सम्पादकीय रूपेँ एहि भेदकेँ आरो स्पष्ट रखबाक चाही : अपराधक नैतिक मूल्यांकन, कथाक भीतर दण्ड अथवा क्षमा, आ उपन्यासक कलात्मक निर्माण तीन अलग प्रश्न छथि। पात्रक कलात्मक जटिलता स्वीकार करब ओकर कृत्यकेँ वैधता देब नहि थिक।

१२. प्रणव आ रवि : दुइ तरहक नैतिक असफलता

'हमरा लग रहब?'क प्रणव अन्याय देखबाक बाद पर्याप्त निर्णायक कृत्य नहि करैत; 'नवारम्भ'क रवि परिवर्तनक भाषा अपनबैतहुँ स्वयं हिंसक सत्ता-संस्कारक हिस्सा बनि जाइत अछि। एहि तुलना सँ सामाजिक नैतिकताक दू अलग विफलता स्पष्ट होइत अछि—प्रतिरोधक अभाव आ प्रतिरोधक वाणी-व्यवहारक अन्तर्विरोध। दुनू पात्रकेँ एकही 'दुर्बल नायक' श्रेणीमे राखब भेद मेटायब होएत। पहिलकेँ जाँचबाक प्रश्न अछि दर्शक-भावक राजनीति; दोसरकेँ जाँचबाक प्रश्न अछि उत्तरदायित्व आ अपराधक स्वीकार।

ठाकुरक अलग-अलग समीक्षामे एहि तुलनाक सम्भावना उपस्थित अछि। मुदा पात्रक घटनाक्रम, कथा-समय आ कथनकर्ताक मूल्य-निर्णय समान प्रमाण-सोपान पर राखि पढ़ल जाए, तखनहि तुलना अधिक दृढ़ होएत। रचनासभक सामाजिक स्थापना कतेक समान अछि आ शिल्पक गति कतेक भिन्न—ई प्रश्न साहित्यिक मूल्यांकनक केन्द्र होबाक चाही। समाजवादी वा सुधारवादी कथनात्मक आशय मात्रसँ हर पात्रक जीवन एकही नैतिक निष्कर्षमे नहि सिमटैत।

चतुर्थ विभाग : 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'क लोककथा आ प्रतिरोध

१३. लोककथा सँ उपन्यासक नैतिक ढाँचा धरि

'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'क आरम्भमे भास्कर अपन दादीसँ कठोरी बाबाजीक कथा सुनैत अछि। ठाकुरक अध्ययन एहि कथा-भीतर-कथा केँ सजावटी लोक-प्रसंग नहि, प्रतिरोधक नैतिक आरम्भ मानैत अछि। हिंसक दबावक बीच सेहो अन्याय पर प्रश्न छोड़ि नहि देबाक बाबाजीक जिद बालकक

चेतनामे प्रश्न करबाक परम्परा स्थापित करैत अछि। एतए लोकस्मृति वर्तमान समाजसँ संवाद करबाक जीवित उपकरण बनैत अछि। रचना जँ पुरान कथा कैँ नव जीवनक परीक्षा बना दैत अछि तँ ओकर अंतःस्थापन कथाशिल्पक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिक।

एकर परीक्षणमे सावधानी आवश्यक अछि। लोककथा कहनिहार दादीक आवाज आ उपन्यासक मुख्य कथनकर्ताक व्याख्या एक समान नहि; कथाक भीतर कठरी बाबाजीक साहस आ भास्करक वयस्क जीवन सेहो सीधा प्रतिरूप नहि। दादीक कथन बालककैँ नैतिक शिक्षा दैत अछि, मुदा आगामी समाज ओहि शिक्षाक अनुकूल अछि कि नहि—कृति एही द्वन्द्वकैँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। ठाकुरक अध्ययन एहि विरोधाभासक अर्थ खोलैत अछि; कथा-समयक भेद आ प्रतीकक पुनरावर्तनक सटीक परीक्षणसँ ई विवेचन आरो दृढ़ होएत।

१४. भास्कर, सामन्ती परिवार आ आधुनिक संस्थाक प्रतिपरीक्षा

भास्करक बाल्यक नैतिक जिज्ञासा आगाँ विश्वविद्यालय आ सार्वजनिक संस्थासभक आचरणसँ टकराइत अछि। समीक्षा अनुसार ओकर जीवनक दुःखान्त परिणति सामाजिक मूल्यक एक असाधारण असफलता प्रकाशमे आनैत अछि। कथामे सामन्ती परिवारक वैभव, वंशक प्रतिष्ठा, विधवा-जीवनक पृथक्करण आ स्त्रीपर नियन्त्रणक संस्कार उपस्थित छथि। एहन वातावरण व्यक्ति कैँ केवल निजी परिवारक सदस्य नहि, वंशीय सत्ता आ सामाजिक स्मृतिक उत्तराधिकारी बना दैत अछि। भवन, रसोई, बड़की कोठरी वा घरेलू अनुशासन सामाजिक इतिहासक संरचना बनैत अछि।

ठाकुरक अध्ययन आधुनिक गणतन्त्रक संस्थागत अनैतिकता आ सामन्ती हिंसाक निरन्तरताकैँ जोड़बाक प्रस्ताव करैत अछि। ई प्रस्ताव साहित्यिक रूपैँ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर प्रत्यक्ष आधार कहियाक दृश्य, कथाक भीतरक घटना आ आलोचकक व्याख्यात्मक विस्तारमे भेद राखि देखबाक चाही। जुम्मनक मानवीयता, ब्रह्मक समूहगत कुण्ठा आ महेन्द्रक उत्तरदायित्व सन पात्र-भूमिका एकहि नैतिक चित्रमे अलग-अलग रंग जोड़ैत अछि। भास्करक मृत्युकैँ महज समाजक सुधारात्मक उपदेश बनायब त्रासदीक अनसुलझल प्रश्न हरायब होएत।

१५. राजा, पोखरि आ मछरी : प्रतीकात्मक व्याख्याक प्रमाण-सीमा

उपन्यासक प्रश्नवाचक शीर्षक पाठककेँ गणना, सीमित जलक्षेत्र आ अधिकारक सम्बन्धक दिशा दैत अछि। राजा ककरा गनैत अछि, पोखरि ककर नियन्त्रणमे अछि, आ मछरीक संख्या निर्धारण करनिहार दृष्टि अपनाकेँ कतेक अधिकृत मानैत अछि—ई प्रश्न राजनीतिक रूपकक सम्भावना खोलैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर स्वयं एहि प्रतीकार्थकेँ व्याख्यात्मक सम्भावना मानि रखैत छथि, कथाक प्रत्येक दृश्यक सिद्ध अभिप्राय नहि। आलोचनामे एहि आत्मसंयमक विशेष महत्त्व अछि।

कवनो शीर्षकक अर्थ बहुस्तरीय हो सकैत अछि, मुदा प्रतीकक सुन्दरता ओकर प्रमाण नहि। पोखरि वास्तविक भौगोलिक वस्तुओ भऽ सकैत अछि; गणनाक पद कथा-संसारमे व्यवहारिक खेल अथवा लोकवाक्यक रूप सेहो रखि सकैत अछि। एहि विभिन्न सम्भावनासँ घबराएब नहि, ओकर बीच सम्बन्ध खोजब आलोचकक कर्तव्य अछि। कठरी बाबाजीक प्रश्न, भास्करक सवाल आ कथाक अन्तःप्रश्नक बीच अर्थक सूत्र बनैत अछि कि नहि—ई निर्णय उपन्यासक भाषिक संरचनासँ पुष्ट होबाक चाही।

पंचम विभाग : 'दिदवल'क बीस कथाक सामाजिक आ आख्यानिक परिप्रेक्ष्य

१६. संग्रहक वैविध्य : गाम, शहर, भूख आ संस्थाक लोक

'दिदवल' पर गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षा बीस कथाक व्यापक समय आ अनुभवक्षेत्र सामने अनैत अछि। 'धरती कुहरि उठल', 'ग्राम सुधार समिति', 'विशेषाधिकार', 'मन्दाकिनी', 'दिदवल', 'पतिव्रता' आ 'अष्टावक्रक शेष कथा' सन रचनासभक संग अन्य कथामे भूख, प्रतीक्षा, परिवारक अविश्वास, संस्थागत ढोंग आ नगरीय अकेलापनक प्रश्न जुड़ैत अछि। संग्रहक महत्त्व एहि तथ्य मात्रमे नहि जे अनेक सामाजिक विषय आएल अछि; प्रश्न ई अछि जे लघु कथा अपन आकारमे एहि विषयसभकेँ अलग कथन-शिल्प कोना प्रदान करैत अछि।

ठाकुरक अध्ययनमे कथावस्तुक सारांशसँ ऊपर उठि दृष्टिबिन्दु, स्मृति आ संवादक स्वर पर ध्यान देबाक प्रयास अछि। 'मन्दाकिनी' सन स्मृतिपरक कथा आ 'विशेषाधिकार' सन संक्षिप्त प्रहारक कथा पर एकहि गति-सूत्र लागू नहि कएल जा सकैत। गामक सामाजिक दबाव आ नगरक औपचारिक संस्थाक विडम्बना सेहो भिन्न प्रकारक भाषिक संरचना चाहैत अछि। समीक्षाक निर्णायक उपलब्धि तखन उभरैत अछि जखन ई भिन्नता महत्त्व पबैत अछि; केवल 'सामाजिक यथार्थ'क साझा नाम कथा-विशेषक सौन्दर्य अलग नहि करि सकैत।

१७. 'दिदवल', 'पतिव्रता' आ कथाक नैतिक असहजता

शीर्षक-कथा 'दिदवल'कैँ ठाकुर आधुनिक गृह-संसार, माध्यम आ अन्तःपरीक्षणक तनावसँ जोड़ैत छथि। ई कथ्य बदलैत जीवनक सुविधा आ मनुष्यक आत्मविश्वासक बीचक अनिश्चित सम्बन्ध खोलबाक अवसर दैत अछि। कथा जखन दैनिकताक सामान्य दृश्यसँ भय अथवा अपराध-बोधक आन्तरिक संसारक ओर जाइत अछि तँ कथनक गति महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। आधुनिक उपकरण वा परिवेशकैँ स्वतः पतनक संकेत मानि लेनाइ साहित्यिक विश्लेषणक स्थानापन्न नहि होयत। ई देखब चाही जे परिवेश पात्रक निर्णयक अर्थकैँ कोना बदलबैत अछि।

'पतिव्रता'क सन्दर्भमे स्त्रीक देह, वर्ग, घरक श्रम आ नैतिक नामकरणक दोहरा मानदण्ड महत्वपूर्ण अछि। पत्नी अथवा स्त्रीक 'सदाचार' ककर आदेश पर परिभाषित होइत अछि, आ पुरुषक आचरण पर ओही मानदण्ड लागैत अछि कि नहि—ई प्रश्न कथाक सामाजिक शक्ति उजागर करैत अछि। मुदा आलोचनाक दायित्व पात्रक नैतिक क्षोभ पर निर्णय सुनायब मात्र नहि, कथा द्वारा निर्मित दृश्यात्मक दबाव आ कथनकर्ताक दूरी चिह्नब सेहो अछि। ठाकुरक विवेचन सामाजिक असमानताक स्पष्ट दिशा दैत अछि; कथाक सूक्ष्म अनकहल स्थानक पुनर्पाठ ओकरा आरो सुदृढ़ बनाय सकैत अछि।

१८. 'अष्टावक्रक शेष कथा' : परम्परा आ पदानुक्रमक उलट अर्थ

'अष्टावक्रक शेष कथा'क समीक्षा तीर्थ, धार्मिक अनुष्ठान, समूह-मनःस्थिति आ सामाजिक पदानुक्रमक परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान दैत अछि। प्रचलित सांस्कृतिक सन्दर्भ कथा लेल अर्थक तैयार आधार देत अछि, मुदा रचनाक

शिल्प ओकर पुनर्व्याख्यामे निहित रहैत अछि। समाज धार्मिक प्रतीकक माध्यमेँ समानता अथवा आध्यात्मिक मर्यादाक घोषणा करि सकैत अछि; ओकर व्यवहारमे भेदभाव कायम रहला पर कथाक विडम्बना उत्पन्न होइत अछि। एहि जटिलताकेँ धार्मिक परम्पराक सीधा उपहास कहि देब कथा-दृष्टिक सम्भावना घटायब होएत।

समीक्षा लेल प्रश्न ई अछि जे कोन पात्र परम्पराक अधिकारसँ बाजैत अछि, कोन व्यक्ति ओहि अधिकारक परिणाम झेलैत अछि, आ कथनक अन्त कतेक प्रश्न खुलल छोड़ैत अछि। कृतिक शीर्षक प्रसिद्ध नामक नव प्रसङ्ग रचैत अछि; तकर महत्त्व अपनहि नामक बड़प्पनमे नहि, कथा-संसारक शक्ति-संरचनासँ ओकर सम्बन्धमे अछि। ठाकुरक अध्ययन एहि सामाजिक पठनीयताकेँ सामने अनैत अछि, मुदा विशिष्ट दृश्य आ भाषा-प्रयोगक अधिक उद्धरण विश्लेषणकेँ संदर्भसिद्ध बनाय सकैत अछि।

१९. संस्था, भूख आ सामान्य दिनक विडम्बना

‘ग्राम सुधार समिति’, ‘विशेषाधिकार’, ‘इजोतमे हेरायल लोकसभ’ आ ‘खूनी’ सन कथामे समीक्षक सार्वजनिक संस्था आ व्यक्तिगत असुरक्षाक सम्बन्ध खोजैत छथि। सुधारक संस्था यदि जरूरतमन्दक आवाज सुनबाक बदला अपन प्रतिष्ठाक प्रदर्शन करय, तँ नाम आ कार्यक दूरी व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि। जनसमूहक आन्दोलन अगर व्यक्तिगत भूखक अनुभवकेँ निगलि जाए, तँ सामूहिक नारा आ निजी दुःखक अन्तर कथा-संसारमे विशेष महत्त्व प्राप्त करैत अछि। एहि कथासभक सामाजिक तीखापन उपदेशक भाषामे नहि, परिचित दैनिक परिस्थितिक असामान्य परिणाममे अछि।

उपलब्ध समीक्षामे स्वास्थ्य, रोग, प्रतीक्षा, गामक भय आ कार्यालयक आदेशक प्रसंग सेहो अछि। ई सभ उदाहरण देखबैत अछि जे सामाजिक सत्ता खाली पहरेदार वा जमींदारक शरीरमे नहि, देरी, सिफारिश, नियमक असमान अनुप्रयोग आ लोकनिन्दाक माध्यमेँ सेहो क्रियाशील रहैत अछि। तथापि ‘संस्था’ शब्द स्वयं सम्पूर्ण घटना नहि बतबैत; लेखक कथा-पात्रकेँ कोन दृश्य मेँ कतेक समय दैत छथि, संस्था ककरा सुनैत अछि, मौन ककर विवशता बनैत अछि—एहि विशिष्ट प्रश्नसँ आलोचना गाढ़ बनैत अछि।

षष्ठ विभाग : ‘कथा-प्रभास’क तीन दशक आ कथन-शिल्प

२०. सातम, आठम आ नवम दशक : कालानुक्रम आ रचनात्मक परिवर्तन

‘कथा-प्रभास’क उपलब्ध अध्ययन अनुसार संकलन तीन दशकक तीन खण्डमे विभक्त अछि—सातम दशकक चौदह, आठम दशकक सात आ नवम दशकक सात कथा। ई क्रम एक लेखकक चयनित रचनासभक कालगत पाठ संभव बनबैत अछि; सम्पूर्ण मैथिली कथासाहित्यक निष्पक्ष कालक्रमक पर्याय नहि। गजेन्द्र ठाकुर एहि भेदकेँ पहचानि गामक सत्ता, परिवारक सम्बन्ध, स्मृति, संस्थागत दबाव आ कथनक आत्मपरीक्षात्मक रूपक विकास देखबैत छथि। साहित्येतिहासक स्तरपर एही सीमित, परन्तु एकरूप पाठ-क्षेत्रक महत्त्व अछि।

कथाकारक विकासकेँ सीधा रेखामे ‘पुरान रूपसँ अधिक आधुनिक रूप’ बनाय देब सावधानीविहीन होएत। पुरान दशकक सामाजिक प्रसंग नव दशकमे नव साधनसँ लौटि सकैत अछि; कखनो आरम्भिक कथा बादक रचनासँ अधिक रूपगत जोखिम उठबैत अछि। तेँ समयानुसार वर्गीकरण आलोचनात्मक सुविधा थिक, प्रगतिक अनिवार्य सिद्धान्त नहि। ठाकुरक समीक्षा जँ कथा-विशेषक रूपान्तर आ स्वर-भिन्नता पर बल दैत अछि तँ संकलनक काल-योजनाक साहित्यिक औचित्य स्पष्ट होइत अछि।

२१. लिफाफ, पत्र आ मौन : कथाक भीतर संचारक रूप

‘लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल’ सन शीर्षक कथाक भीतर सूचना, पत्र आ निर्णयक मध्यस्थताक महत्त्वक संकेत दैत अछि। पत्र लिखनिहार व्यक्ति आ पत्र पढ़निहार व्यक्ति एकहि समयक अनुभवमे नहि रहैत; दुनूक बीच देरी, अपेक्षा आ गलत अर्थक सम्भावना बनैत अछि। ठाकुरक विवेचन एहि संचार-रूपकेँ कथात्मक तनावक स्रोत मानबाक अवसर उपलब्ध करैत अछि। कथा जँ पत्रक माध्यमेँ पात्रक भीतरक आवाज दैत अछि, तँ पत्रक भाषा स्वयं चरित्रांकनक अंग भऽ जाइत अछि।

मौन सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। सामाजिक मर्यादा कतेको बेर ई निर्धारित करैत अछि जे ककरा बजबाक अधिकार अछि आ ककरा कथा लिखलाक बादो अपन पक्ष स्पष्ट करबाक अवसर नहि भेटैत। कथावाचकक सहानुभूति यदि एक

व्यक्तिपर केन्दित रहय, तँ दोसर पात्रक मौन कथाक अवांछित रिक्ति सेहो भऽ सकैत अछि। तें पत्र, आवाज, संवाद आ अन्तक टिप्पणी पर समवेत ध्यान देब आवश्यक अछि। उपन्यासक विस्तृत मनोविश्लेषणक बदला कथाक लघु आकार एहि सूक्ष्म औजारसभसँ अर्थ रचैत अछि।

२२. 'गिरगिट', 'दिनचर्या', 'पिता' आ सामाजिक भूमिका

'गिरगिट', 'दिनचर्या', 'पिता', 'मलाहक टोल', 'पुरान चरित्रक नव कथा', 'स्थानान्तरण', 'विकलांग', 'बाढ़ि' आ 'रक्षक' सन कथाक चर्चा ठाकुरक संग्रह-अध्ययनमे अबैत अछि। ई शीर्षकसभ परिचित समाजक अनेक रूपक खोलैत अछि। दिनचर्या सामान्य समयक प्रतीक भऽ सकैत अछि, जखनकि स्थानान्तरण अथवा बाढ़ि जीवनक स्थिरताकेँ प्रश्न बनबैत अछि। पिता अथवा रक्षक सन सम्बन्धसूचक शब्द कर्तव्य आ अधिकारक बीच तनाव उत्पन्न करैत अछि। आलोचनाक काज नामक सम्भावना गनायब नहि, ओकर कथाक दृश्यसँ सम्बन्ध देखब अछि।

लोकपरिचयक दृष्टिएँ 'मलाहक टोल' सन सामाजिक स्थल आ परिवारक कथा एकरूप अनुभव नहि अछि। टोलक सामूहिक संरचना, पेशाक सम्बन्ध आ बहुजन जीवनक आवाजक परीक्षा अलग कसौटी माँगैत अछि। दोसर दिस 'पिता'क घर भीतरक अधिकार आ स्नेहक विरोधाभासकेँ संक्षिप्त दृश्यसँ उघारि सकैत अछि। ठाकुरक समीक्षाक विस्तृत सूची अध्ययनक दिशा दैत अछि; परन्तु प्रतिनिधि कथा चुनबाक औचित्य स्पष्ट करब अध्येताक अगिला काम अछि।

२३. हास्य, आत्मव्यंग्य आ कथनकर्ताक मर्यादा

'कथा-प्रभास'क आलोचनामे बोलचालक मैथिली, आत्मालोचनात्मक स्वर आ गप्पक निकट कथन विशेष उल्लेखनीय अछि। कथाकार पाठकक संग जे निकटता बनबैत छथि, ओ केवल शैलीगत मधुरता नहि; ओकरा माध्यमेँ सामाजिक पात्र अपन तर्क, आत्मप्रवंचना आ आशङ्काकेँ स्वयं उद्घाटित करैत अछि। व्यंग्यक शक्ति तखन बढ़ैत अछि जखन कथनकर्ता ककरो दण्ड देबाक उत्साहसँ पूर्व ओकर आचरणक आन्तरिक विसंगति देखबैत अछि। हास्य आ करुणा एहि कारण विरोधी नहि, सामाजिक आत्मपरीक्षाक दू रूप छथि।

एहि शैलीक सीमा सेहो अछि। लगातार गप्प, स्पष्टीकरण आ नैतिक टिप्पणी पात्रकेँ अपन व्यवहारसँ अर्थ खोलबाक अवसर कम दऽ सकैत अछि। स्त्री-पात्र वा श्रमजीवी गौण व्यक्ति यदि कथावाचकक सहानुभूतिमे ही विलीन भऽ जाए तँ बहुस्वरक दावा अपूर्ण रहत। ठाकुरक अध्ययन एहि असमानताक उल्लेख करैत अछि। सम्पादकीय कसौटी ई अछि जे कखन सामाजिक टिप्पणी रचनाक अविभाज्य स्वर बनैत अछि आ कखन पाठकक निष्कर्षक स्वतन्त्रता घटाबैत अछि।

सप्तम विभाग : उपन्यास आ कथाक साझा आलोचनात्मक प्रश्न

२४. पुरुष नायकत्व, स्त्रीक वाणी आ न्यायपूर्ण पाठ

सातो समीक्षाक बीच स्त्रीक स्थिति एक साझा आलोचनात्मक सूत्र अछि, मुदा ओकर रूप भिन्न अछि। 'अभिशप्त'मे मीरा पुरुष-अहंक परीक्षा बनैत छथि; 'युगपुरुष'मे रोजी पर समाजक नैतिक उपाधि प्रश्नांकित होइत अछि; 'हमरा लग रहब?'मे शीला आ मधुक जीवन सत्ता-संरचनाक भीतर पढ़ल जाइत अछि; 'नवारम्भ'मे कविता पर हिंसाक नैतिक मूल्यांकन अपरिहार्य अछि। कथासंग्रहसभमे 'पतिव्रता' आ परिवार-केन्द्रित कथासभ एक अन्य, लघु रूपमे लैङ्गिक असमानता प्रस्तुत करैत अछि।

दुनिया पर न्यायपूर्ण दृष्टि राखबाक अर्थ सभ स्त्री-पात्रकेँ एक 'आदर्श प्रतिरोधी' प्रतिमामे रखब नहि। कियो प्रत्यक्ष असहमति व्यक्त करैत छथि, कियो अपन सामाजिक शर्तक बीच निर्णय लैत छथि, कियो पुरुषक कथनमे मात्र उपस्थित छथि। कथनकर्ताक भाषा, स्वतंत्र दृष्टिबिन्दु आ पात्रक निर्णयक अवसर—ई तीनू परीक्षण आवश्यक अछि। ठाकुरक समीक्षासभ स्त्री-स्वायत्तताक आधुनिक प्रश्न उठबैत छथि; अगिला तुलनात्मक अध्ययन एही प्रश्नकेँ दृश्यसिद्ध साक्ष्यसँ जोड़ि सकैत अछि।

२५. सामन्ती व्यवस्था आ आधुनिक संस्थाक निरन्तरता

प्रभासक सामाजिक संसारमे पुरान सामन्ती घर आ आधुनिक शिक्षित संस्था एकहि नैतिक संकटक भिन्न रूप देखबैत अछि। 'नवारम्भ'क हवेली, 'हमरा लग रहब?'क प्रभावशाली घर, 'अभिशप्त'क कार्यालय आ 'दिदवल'क समिति—चारू ठाम अधिकार आ उत्तरदायित्वक सम्बन्ध समान नहि, मुदा असमान शक्तिक उपयोगक प्रश्न अवश्य जुड़ैत अछि। कथासभ एक-दोसराक प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण नहि; साहित्यिक तुलना रूपमे ओ सभ सत्ता-व्यवहारक आवर्ती धारणाक पहचान करबैत अछि।

एहि सम्बन्धमे ठाकुरक आलोचनाक सम्भावना गम्भीर अछि। व्यक्ति जखन स्वयंकेँ रक्षक, सुधारक, विद्वान् वा प्रतिष्ठित कहैत अछि, तखन ओकर व्यवहारक परिणाम पर नजरि देब जरुरी। एहन नाम आ काजक अन्तर कथाक व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि। किन्तु सामन्ती सम्बन्ध आ आधुनिक नौकरशाहीक संरचना बिल्कुल समान कहब गलत होएत; पहिलमे भूमिस्वामित्व आ वंश, दोसरमे पद आ संस्था प्रमुख भऽ सकैत अछि। साझा नैतिक प्रश्नक संग ऐतिहासिक भिन्नताक सम्मान तुलनाक विश्वसनीयता बनबैत अछि।

२६. कथाकाल, अन्त आ नैतिक निष्कर्षक दूरी

उपन्यास विस्तृत समयमे पात्रक परिवर्तन देखेबाक अवकाश रखैत अछि; छोट कथा सीमित क्षणसँ बृहत्तर सामाजिक अर्थ खोलि सकैत अछि। 'नवारम्भ'क तीन खण्ड आ 'कथा-प्रभास'क तीन दशकक वर्गीकरण एक प्रकारक दीर्घ काल-विन्यास अछि, जखनकि 'दिदवल'क कई कथा एक निर्णायक स्थिति पर केन्द्रित अछि। एहि कारण कथानकक 'पूर्णता'क एक समान माप असंगत होयत। कथा कतेक कहैत अछि, कतेक छोड़ैत अछि आ अन्तक अर्थ पहिले सँ तय करैत अछि कि खुलल रखैत अछि—ई प्रश्न हर विधामे अलग उत्तर पबैत अछि।

ठाकुरक अनेक समीक्षामे सुधारवादी उद्देश्य आ कलात्मक विश्वसनीयताक बीच तनाव स्वीकारल गेल अछि। नायकक अचानक परिवर्तन, अपराधक त्वरित क्षमा, अथवा राजनीतिक सन्देशसँ निराकृत करुणा पाठककेँ चकित करि सकैत अछि, मुदा सदैव विश्वासयुक्त नहि। दोसर दिस, दुःखान्त अन्त स्वयं गम्भीर

साहित्यक गारंटी नहि। श्रेष्ठ आलोचना पात्रक अन्तकेँ लेखकक घोषणा नहि, घटनाक क्रमसँ अर्जित परिणामक रूपमे जाँचैत अछि। एहि कसौटीसँ उपन्यास आ कथा दुनूक अर्थ अधिक सूक्ष्म बनैत अछि।

२७. मैथिली कथाभाषा आ सामाजिक स्वरक बहुविधता

उपलब्ध सात अध्ययनमे भाषा सम्बन्धी बहुविध संकेत अछि—घरक सम्बोधन, ग्रामीण गप्प, कार्यालयक औपचारिकता, सार्वजनिक भाषण, पत्र, लोककथा आ मौन। प्रभासक कथाजगतकेँ केवल 'सरल मैथिली' कहब एहि भाषिक विविधताकेँ छोट करब होएत। कथावाचक केकरा कतबा निकट राखैत अछि, पात्र ककरा सम्मानसूचक सम्बोधन दैत अछि, आ कौन प्रसंगमे व्यंग्यक स्वर उठैत अछि—ई सभ भाषा द्वारा सामाजिक सम्बन्धक निर्माणक उपाय छथि।

भाषिक समीक्षा लेल उद्धरणक स्थान विशेष अछि। सामाजिक विषय पर गम्भीर तर्क होइतहुँ यदि एको दृश्यक शब्द-चयन, ध्वनि, वाक्य-गति अथवा विरामक परीक्षण नहि कएल जाए तँ अध्ययन विचारप्रधान रहि सकैत अछि। ठाकुरक संग्रह एहि स्तरक अनेक प्रश्न खोलैत अछि; परवर्ती विद्वत् समीक्षा मूल पाठक विश्वसनीय संस्करणसँ शब्द-शब्दक मिलान कऽ सामाजिक विश्लेषणक संग कथाभाषाक स्वतन्त्र सौन्दर्य-सिद्धि पर बल दऽ सकैत अछि।

अष्टम विभाग : समेकित सम्पादकीय निर्णय

२८. गजेन्द्र ठाकुरक सात अध्ययनक मुख्य उपलब्धि

एहि संग्रहक प्रमुख उपलब्धि सात अलग आलोचनात्मक आलेखक माध्यमेँ प्रभास कुमार चौधरीक गद्यक साहित्यिक क्षेत्रकेँ व्यापक रूपमे समक्ष आनब अछि। पात्र, दृश्य, लोककथा, वर्ग, स्त्रीक नैतिक अधिकार, राजनीतिक प्रतिष्ठा, संस्थागत विडम्बना आ कथा-समय—ई सभ विषय अलग-अलग कृतिक विशिष्ट सन्दर्भमे देखल गेल अछि। विशेषतः आत्मनिर्मित संकट, सार्वजनिक महिमामण्डनक आलोचना, सामन्ती शक्ति-अन्तरण आ कथा-भाषाक व्यंग्यात्मक रूपक बीच सम्वाद रचनाकारक अनेक आयाम पहिचानबाक साधन बनैत अछि।

समीक्षाक दोसर उपलब्धि पूर्ववर्ती मतसँ संवाद करैत आंशिक असहमति स्वीकारब अछि। 'युगपुरुष'क अप्रत्याशित चरित्र-विकास, 'हमरा लग रहब?'क प्रणवक निष्क्रियता, 'नवारम्भ'क रविक नैतिक विफलता आ 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'क प्रश्नवाचक प्रतीक पर विमर्श निर्णायक प्रशंसा वा निन्दासँ अधिक उपयोगी आलोचनात्मक खुलापन दैत अछि। एहि खुलापनक कारण सातो अध्ययनकेँ एक साहित्यिक निर्णय-पुस्तिक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, न कि लेखक-प्रतिष्ठाक प्रशस्तिपत्रक रूपमे।

२९. समीक्षा-पद्धतिक सीमा आ अगिला अनुसन्धानक दिशा

प्रस्तुत पाठाधारमे उपलब्ध आलोचनाक प्राथमिक दायरा रचनाक कथ्य, सामाजिक चरित्र आ विषयगत संरचनाक व्याख्या अछि। कई ठाम शिल्प सम्बन्धी प्रश्न उठल अछि; तथापि कथनकर्ताक दृष्टिबिन्दु, दृश्य-क्रम, काल-परिवर्तन, संवादक प्रत्यक्ष भाषिक आकार आ अन्तक संरचना पर समान गहराइमे साक्ष्य प्रस्तुत नहि। आलोचनाक अगिला चरणमे प्रत्येक ग्रन्थक मूल संस्करणक पाठ-मिलान, व्यवस्थित उद्धरण, भिन्न संस्करणक स्थिति आ आलोचकक तर्कक परस्पर तुलना आवश्यक होएत। ई सुझाव ग्रन्थक अवमूल्यन नहि; उपलब्ध अध्ययनक स्वाभाविक अनुसन्धान-विस्तार अछि।

एकटा विशेष सावधानी स्रोत-स्तरक अछि। पूर्ववर्ती आलोचकक मतक परोक्ष उद्धरणकेँ प्रत्यक्ष उद्धरण समान नहि मानल जाए; ऐतिहासिक वर्ष अथवा पात्रक घटना जखन मूल रचनाक तुलनासँ बाहर हो, तखन सीमित दावाक रूपेँ लिखल जाए। एहि मर्यादाक संग सामाजिक न्याय, लैङ्गिक अधिकार आ साहित्यिक शिल्प पर प्रश्न उठेनाइ पूरी तरह सम्भव अछि। प्रमाणक सीमा बतायब आलोचनात्मक साहसकेँ घटबैत नहि, एकरा विश्वसनीय बनबैत अछि।

३०. साहित्येतिहासमे प्रभासक पुनःस्थानन आ अन्तिम फैसला

पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक संयुक्त पठनसँ प्रभास कुमार चौधरीक कथा-दृष्टिक मुख्य लक्षण सामाजिक दावाक आत्मपरीक्षा रूपमे उभरैत अछि। व्यक्तिक आधुनिकता ओकर निजी न्यायबोधसँ कसौटी पर चढ़ैत अछि; सार्वजनिक महानता शोषितक वास्तविक जीवनसँ टकराइत अछि; सामन्ती

परिवर्तन प्रतिरोधक नैतिक शर्त सामने रखैत अछि; लोककथाक प्रश्न आधुनिक संस्थाक कठोर परीक्षा बनैत अछि। कहानी मेँ एहि तनावक रूप अधिक संक्षिप्त, कखनो कटाक्षपूर्ण आ कखनो स्मृतिमय होइत अछि। ई विस्तृत सामाजिक अनुभव मैथिली गद्यक मूल्यवान क्षेत्र अछि।

अन्तिम सम्पादकीय निर्णय ई अछि जे गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनसभ प्रभासक साहित्यकेँ पुनर्पाठक अनेक उपयोगी द्वार खोलैत छथि; तथापि सभ द्वार अन्तिम निर्णय धरि पहुँचि गेल, एहन नहि। रचनाक मानवीय करुणा, आलोचनात्मक साहस आ सामाजिक दृष्टिक प्रशंसा करतें शिल्पगत असमानता, स्त्रीक वाणी पर नियन्त्रण आ सुधारवादी समाधानक सहजताकेँ प्रश्नमे रखब आवश्यक अछि। एकर साहित्येतिहासिक महत्त्व निश्चिन्त महिमा-निर्माणमे नहि, सामाजिक अनुभवक कठिन अन्तर्विरोधकेँ कथा-संरचना आ आलोचनात्मक विवेकक भीतर जीवित राखबामे अछि।

सन्दर्भ-विवरण

मुख्य पाठाधार : ठाकुर, गजेन्द्र। नित नवल प्रभास कुमार चौधरी : पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा। विदेह, २०२७।

मूल साहित्यक सन्दर्भ : चौधरी, प्रभास कुमार। प्रभास समग्र (उपन्यास)। सम्पादक : डॉ. वन्दना चौधरी। ज्योत्स्ना प्रकाशन, २०१७। उपर्युक्त अध्ययनमे उल्लिखित 'अभिशप्त', 'युगपुरुष', 'हमरा लग रहब?', 'नवारम्भ' आ 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'क स्रोताधार।

कथासंग्रह : चौधरी, प्रभास कुमार। दिदवल; कथा-प्रभास। संस्करण, प्रकाशकीय विवरण आ पाठ-स्थानक सन्दर्भ मूल समीक्षात्मक आलेखसभमे देल गेल अछि; एतय स्वतंत्र प्रकाशकीय पुनःपुष्टि कएल नहि गेल अछि।

पूर्ववर्ती आलोचनाक सन्दर्भ : ठाकुरक अध्ययनसभमे डॉ. अरुण कुमार झा, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ. प्रभावती झा, भीमनाथ झा, उमेश मंडल आ आन समीक्षकक जे मत उल्लिखित अछि, ओकर पूर्ण स्रोत-सूची सम्बन्धित मूल आलेखक सन्दर्भ-ग्रन्थसूचीमे देखल जाए।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८८

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल प्रभास कुमार चौधरी'मे संकलित पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक सात विस्तृत अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि।

'अभिशप्त', 'युगपुरुष', 'हमरा लग रहब?', 'नवारम्भ', 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?', 'दिदवल' आ 'कथा-प्रभास'क अलग शिल्प आ साझा सामाजिक प्रश्न एहि आलोचनाक आधार छथि।

दाम्पत्य-सत्ता, सामन्ती अवशेष, स्त्रीक स्वायत्तता, लोकस्मृति, संस्थागत विडम्बना, कथन-विन्यास आ न्यायबोधक परीक्षा एकर मुख्य विषय अछि।

मूल कृतिक कथन, गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षा आ एहि खण्डक सम्पादकीय निर्णयक प्रमाण-स्तर अलग रखैत साहित्यिक उपलब्धि आ सीमाक सन्तुलित विवेचन कएल गेल अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur